

अखिलेश और आजम की मुलाकात से सधेगी पश्चिमी उप्र की राजनीति

आज बरेली होते हुए रामपुर जाएंगे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष

राज्य व्यूरो, लखनऊ



अमृत विचार : बरेली में बोते दिनों उपर्युक्त विवाद के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव और आजम खां की 8 अक्टूबर बुधवार को होने वाली मुलाकात राजनीतिक रूप से बेहद अहम मानी जा रही है। सपा प्रमुख पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बुधवार को वाया बरेली रामपुर जाएंगे। इस मुलाकात से सपा प्रमुख मुस्लिम बोट बैंक को साथें और पार्टी में पीड़ीए (पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यक) एकता का संदेश देने की कोशिश करेंगे।

रामपुर सपा प्रमुख गढ़ों में एक रहा है। वहां मनमान खां लंबे समय से अग्रवाल कर रहे थे हाले के वर्षों में उनकी सक्रिय राजनीति से दूरी और समर्थकों की नाराजगी ने सपा में नई चुनौतियां पैदा कर दी हैं। दूसरी ओर बरेली में 26 सिंतरव को मुस्लिम समाज के प्रदर्शन पर पुलिस के लाठी चार्च से सपा की छिप को नुकसान पहुंच रहा है। हालांकि, सपा का प्रतिनिधिमंडल बरेली जाने

करने का प्रयास, बल्कि संगठनात्मक मजबूती का हिस्सा भी माना जा रहा है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि अखिलेश और आजम की मुलाकात के दौरान पार्टी की रणनीति, भविष्य में आजम की सक्रियता और 2027 के विधानसभा चुनावों पर चर्चा हो सकती है। साथ ही, मुस्लिम समाज में विश्वास मजबूत करने की रुपरेखा भी तैयार की जाएगी।

यह मुलाकात सपा के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि आजम का प्रभाव पश्चिमी उपर्युक्त विवाद के कई इलाकों में अब भी कायम है। इसके अलावा सपा के भीतर पुराने कार्यकर्ताओं का सक्रियता करने और भाजपा के वडों के प्रभाव को चुनौती देने की दिशा में एक बड़ा कदम है। रामपुर में आजम की मौजूदी और भाजपा के लिए विभिन्न क्षेत्रों के अलावा आस पास के जनपदों के लोग भी कथा ब्रह्मण के लिए आये। विभिन्न क्षेत्रों में हजारों की संस्कृत में श्रद्धालुओं की उपस्थिति की संभावना है। एसडीएम वार्षिक सिंह, रामपुर के लिए विश्वास पार्टी के लिए विशेष महत्व है। दूसरी ओर अखिलेश के दौरे को लेकर सपा कार्यकर्ताओं में जोश और उम्मीद दोनों दिखाई दे रहे हैं कि यह मुलाकात पार्टी में नई ऊर्जा का संचार करेगी।

सिलेबस तक सीमित न रहें, बाहर की पुस्तकें भी पढ़ें: कुलाधिपति

जिनमें से 51 दफ्तर आजमों को एवं 17 पदक छाँगों को प्राप्त हुए। दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने विद्यार्थियों से कहा कि वे केवल सिलेबस तक सीमित न रहें, बल्कि उससे बाहर की पुस्तकें भी पढ़ें। उन्होंने यह भी कहा कि राज्यपाल की जीवन का एकमात्र लक्ष्य नहीं है जाहिर।

जिनमें से आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। टेक्नोलॉजी आपने से रोजगार के स्वरूप

में परिवर्तन हुआ है, अतः युवाओं को आमनीर्भव बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए और नए-नए कौशल सीखने का प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर कुलाधिपति ने विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए एवं ग्रामीण जनों के लिए प्रतियोगिताओं में विजेती विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए।

जिनमें से 51 दफ्तर आजमों को एवं 17 पदक छाँगों को प्राप्त हुए। दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने विद्यार्थियों से कहा कि वे केवल सिलेबस तक सीमित न रहें, बल्कि उससे बाहर की पुस्तकें भी पढ़ें। उन्होंने यह भी कहा कि राज्यपाल की जीवन का एकमात्र लक्ष्य नहीं है जाहिर।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए वी सलाह

में से एक अधिकारी ने जाहिर के स्वरूप

अमृत विचार

कलासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

वर्गीकृत विज्ञापन हेतु अमृत विचार अखबार के कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

मैंने अपना नाम JAHIRUDDIN से बदलकर JAHIRUDDIN RAYNI रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/O-AKBAR ADD-H. No - 115 A U R A H W A DHAWAI DIST-BALRAMPUR (U.P.)

सूचना

मैंने अपना नाम FARZANA से बदलकर FARZANA BANO रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। W/O-MOHAMMAD AKHTAR ADD-258/60KA/3, NADAN MAHAL DIST-LUCKNOW-226004 (U.P.)

सूचना

मैंने अपना नाम MOHAMMAD SHAKIR से बदलकर MOHD SHAKIR SIDDIQUI रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/O-MOHAMMAD SIDDIQ ADD-268/46/42, TAKIYA CHAND ALI SHAH, AISHBAGH RAJENDRA NAGAR DIST-LUCKNOW-226004 (U.P.)

सूचना

मेरे अपनी नाम ANJU ROY एवं DOB 03/11/1982 गलत दर्ज हो गई है। जबकि असी नाम ANJU RAI व DOB 10/11/1982 है। कमल मुराद परामर्शदाता ने अपनी नाम राजनारायण पुत्र जगनारायण नि. 58/E/26 दबौली कानपुर नार 208202 ज. प्र.

सूचना

मैंने अपनी नाम BOB बदलता खाता संख्या 31600100000331 में मेरा नाम राम नारायण यादव है। जबकि आधार कार्ड वाच्य प्रपत्रों में राम नारायण है। मुझे राम नारायण पुत्र स्व. राम जगनार के नाम से जाना जाए। नि.मिल्क बोर्ड कच्ची बस्ती गोपाल नगर कानपुर नार 208011

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम ममता यादव था जो जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एवं कक्षा 10 का छात्र था। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग कर दिया है। जबकि उसकी जान आनंद कुमार ने अपनी नाम रिपलिंग कर दिया है। उसकी मार्कशीरी में मेरा नाम रिपलिंग था।

सूचना

मेरा पुत्र रिषभ एसएस मेमोरियल सीनियर सेकेन्डरी प्लिकल स्कूल सॉफ्टैन्स एव

न्यूज ब्रीफ

मामूली विवाद में हुई मारपीट, दो घायल

बिलग्राम, हरदोई, अमृत विचार। नगर के मोहल्ले मेदानपुर में मंगलवार को बकरी जाने के लिए दो पक्षों में मारपीट हो गई। इस घटना में दोनों पक्षों से दो लोग घायल हुए हैं। प्रथम पक्ष के लाला राम निवासी मोहल्ले मेदानपुर में घटना के लिए उनकी बकरी बिलग्राम के द्वारा घायल हुई थी। इसी दोष पर विवाद के बेटे ने उन पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया, जिससे उनके सिर और शरीर पर गंभीर चोटें आईं। लाला राम पर हमले के साथ हुई बिलग्राम ने बकरी को बीच-बीच के दोरान खिले देवी को भी चोटें आईं। दोनों पक्षों ने इस पर मारपीट का आरोप लाया है। पुलिस ने दोनों घायलों को मैडिकल जांच के लिए अस्पताल भेजा है। प्रभारी निरीक्षक अरविंद कुमार राय ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है। जो भी दोषी पाया जाएगा, उसके खिलाफ नियामासार कर्तव्याई की जाएगी।

युवक को पीटकर दी धमकी, चार पर केस दर्दियां, हरदोई, अमृत विचार।

राजश में युवक की लाठी-डंडों से पिटाई करते हुए युवक को अनामाली की धमकी दी गई। पुलिस ने घटना के दौरान हमलावरों के खिलाफ पिटाई के दर्दी गई है। पुलिस ने घटना के दौरान हमलावरों के खिलाफ पिटाई के दर्दी गई है। यानी क्षेत्र के गांव भायाल के रामदेव ने पुलिस को तरीर देते हुए कहा कि चार पर केस दर्दियां देने वाली वारिश की धमकी दी गई। इस दौरान पूजा अर्चना के लिए गांव के रहने वाले गुण, अमरण, मंजुल और गीत देवी ने उसको गतिविधि देते हुए लाली डंडों से पिटाई कर दी। आरोप है, कि हमलावरों ने उसको जानामल की धमकी दी। शान्तिकांश कुलदीप सिंह ने बताया कि तरीर के भुताविक रिपोर्ट दर्ज कर दी गई है।

मारपीट के मामले में तीन आरोपी गिरफतार

बिलग्राम, हरदोई, अमृत विचार। पुलिस ने मारपीट के एक मामले में तीन अभियुक्तों को गिरफतार किया है। यह कार्रवाई 5 अक्टूबर को साठियापुर गांव में हुई थी। अभियुक्तों को खिलाफ मामले में बंधन के संबंध में की गई है। पुलिस ने अनुज कुमार पुरुष रामलपन निवासी साठियापुर ने बिलग्राम थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया था कि अनिल, शिवकुमार और अन्य लोगों ने उनके साथ गांव-गोली और मारपीट कर उठे घायल कर दिया था। इस दौरान गुण, अमरण, मंजुल और गीत देवी ने इसके खिलाफ पिटाई के दर्दी गई है।

अमृत विचार। जिले में धूमधाम से मनाई गई वाल्मीकि जयंती का अध्यक्ष सुखसागर मिश्र ने पूजा-अर्चना कर उतारी आरती

संवाददाता, हरदोई

जिले भर में धूमधाम से मनाई गई वाल्मीकि जयंती का अध्यक्ष सुखसागर मिश्र ने पूजा-अर्चना कर उतारी आरती आरती उतारते नगर पालिका अध्यक्ष मधुर मिश्र।

अमृत विचार। जिले में धूमधाम से मनाई गई वाल्मीकि जयंती के अवसर पर मंगलवार को विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान पूजा अर्चना व शोभायात्रा भी निकाली गई। नगर के नईबासी स्थित वाल्मीकि मंदिर पर पालिका अध्यक्ष सुखसागर मिश्र ने महर्षि का विधिवत पूजन-अर्चन किया। इसके बाद नगर में शोभायात्रा निकाली गई।

शोभायात्रा को पूर्व पालिका अध्यक्ष उमेश अग्रवाल ने हरी झांडी दिखाकर रखाया किया। शोभायात्रा में विभिन्न शाकियों का प्रदर्शन किया गया। यात्रा नगर के मुख्य मार्गों से गुजरी।

मंदिर में हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूरनमंकर में मां अन्नपूर्णा गौरी शंकर मन्दिर में हनुमान चालीसा का पाठ

प्रामीणी द्वारा रखा गया, जिसमें युवा समाजसेवी विकास अर्कवंशी ने

हनुमान चालीसा का हुआ पाठ

मल्लाला, हरदोई, अमृत विचार।

पूर

बुधवार, 8 अप्रूबर 2025



निराशा संभव को असंभव बना देती है।
-मुशी प्रेमचंद, साहित्यकार

प्रतिरक्षा की नई परिभाषा

इस वर्ष का फिजियोलॉजी या चिकित्सास्त्र अथवा मेडिसिन का नोबेल पुरस्कार उन खोजों के लिए दिया गया है, जो मानव प्रतिरक्षा प्रणाली को गहराई से समझन और उसे नियंत्रित करने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। अमेरिका की मेरी ब्रैंको, फ्रेड रेस्मेन तथा जापान के शिमोन साकागुची ने अपने शोध और जैविक प्रयोगों के माध्यम से स्वप्रतिरक्षी या आंटोइम्यून प्रणाली से जुड़ी वैज्ञानिक समझ में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है। कुल मिलाकर, नोबेल पुरस्कार विजेताओं के शोध ने प्रतिरक्षा प्रणाली से संबंधित क्रियाकालों और कार्य प्रणालियों की तह में जाकर उनके जिन विकारों के अनुवर्शक, आणविक और पर्यावरणीय निर्वाचनों का पata लगाया है, उसने पूरी प्रतिरक्षा प्रणाली को नए सिरे से पुनर्विभागित किया है। उनकी खोज से कई गोंगों के शीघ्र निदान और लक्षित उपचारों का नया मार्ग प्रशस्त दुआ है। निःसंदेह यह क्रांतिकारी खोज न केवल चिकित्सा विज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है, बल्कि इसने पेरेफरल इम्यून टॉलरेंस से संबंधित प्रतिरक्षा सहिष्णुता के नए क्षेत्र में आगे के शोध के लिए भी एक ठोक नींव रखी है।

हमारा इम्यून सिस्टम प्रतिदिन रोग उत्पन्न करने वाले लाखों बाहरी सूक्ष्मजीवों और अन्य हमलावर तत्वों से हमारी रक्षा करता है, लेकिन कभी-कभी यही प्रणाली भूमित होकर शरीर के अपने अंगों को ही शुरु समझने लगती है, जिससे टाइप-1 डायाबीटीज, रूमेटायब आर्थराइटिस जैसे अवैध आंटोइम्यून रोग उत्पन्न होते हैं। कई बार जब शरीर में कोई अंग प्रत्यारोपित किया जाता है, तो इम्यून सिस्टम उसे भी 'अनजाना' की 'बाहरी' समझकर कर देता है। इस दूसरे में पेरेफरल इम्यून टॉलरेंस की भूमिका अन्तर्मुखी है। यह प्रणाली शरीर की अपनी कोशिकाओं और प्रोटीनों को पहचानती है और यदि कोई टी-सेल उन पर हमला करने की कोशिश करे, तो उसे निकिय या समाप्त कर देती है। ब्रैंको, रेस्मेन और साकागुची ने इस प्रणाली के 'सुरक्षा प्रहरी'- रेस्मेनी टी-सेल्स की पहचान की है। इन टी-सेल्स का कार्य यह सुनिश्चित करना है कि इम्यून सिस्टम गलती से अपने ही शरीर पर हमला न करे। यह खोज प्रतिरक्षा सहिष्णुता की अवधारणा को एक नई वैज्ञानिक परिभाषा देती है और चिकित्सा विज्ञान को एक नई दिशा प्रदान करती है। इन शोधों का महत्व केवल सेंडॉक्टिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक भी है इससे कैसर, अंटोइम्यून रोगों और अंग प्रत्यारोपण से जुड़ी चिकित्सा विधियों में सुधार होगा तथा भविष्य में लाखों मरीजों के लिए यह खोज रोग से राहत कारण बननी।

यह अवसर भारतीय मूल के वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को भी याद करने का है। 1968 में हरायावंद खुराना को मेडिसिन का नोबेल पुरस्कार मिला था। उन्होंने जेनेटिक कोड की संरचना से प्रोटीन निर्माण को समझने में अत्यंत भूमिका निभाई थी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

प्रसंगवत्ता

पुण्य तिथि: विश्व के बेजोड़ कथा शिल्पी मुंशी प्रेमचंद

प्रेमचंद हिंद कहानी के आधार स्तंभ हैं। वे विश्व के बेजोड़ कथा शिल्पी माने जाते हैं। हिंदी साहित्य की कहानी यात्रा प्रेमचंद के बिना अधीरी है। उन्होंने कई विश्व प्रसिद्ध उपन्यास भी लिखे, मगर उनकी ख्याति एक कहानीकार के रूप में ज्यादा है। प्रेमचंद की कहानियों में समाज का प्रतिविवर स्पष्ट रूप से इलाकता है। उन्होंने आम आदमी को केंद्र में रखकर अपनी कहानियां लिखीं और आम आदमी के मर्म को छूने का प्रयास किया, जिसके कारण उनकी कहानियां लोगों के बीच बढ़ते लोगिय हुईं। सामाजिक तान-बने पर लिखी गईं, उनकी कहानियां बुनावट, कसाव, शिल्प एवं कथ्य की दृष्टि से बेजोड़ हैं। उन्होंने अपनी कहानियों को भाषा की दुरुहता एवं व्याकार की दुरुहता के बीच बढ़ाव दिया है। यह उनकी खोजों को नैतिक संघर्षों में लिखने लगता है।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

1880 से 1936 तक का प्रेमचंद का जीवन काल देश की पराधीनता का काल था। उस समय अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेज शासकों के क्रूर अत्याचारों से देश की वैधव स्प्राथ था। और देश की जनता सफर तहत रहे थे। उन्होंने देश के वैधव स्प्राथ के रूप में उनकी खोजों को नैतिक संघर्षों के उपरांत उन्होंने एक शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्राप्त किया। बाद में पदोन्नति पाकर वे विद्यालयों के उपनिवेशक बन गए।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

1880 से 1936 तक का प्रेमचंद का जीवन काल देश की पराधीनता का काल था। उस समय अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेज शासकों के क्रूर अत्याचारों से देश की जनता करह रही थी। अंग्रेज देश को लूट रहे थे। उन्होंने देश के वैधव स्प्राथ के रूप में उनकी खोजों को नैतिक संघर्षों के उपरांत उन्होंने एक शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्राप्त किया। बाद में पदोन्नति पाकर वे विद्यालयों के उपनिवेशक बन गए।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब चिकित्सा विज्ञान एक नई क्रांति की ओर बढ़ रहा है, यह उम्मीद स्वाभाविक है कि भविष्य में कोई भारतीय वैज्ञानिक भी इस वैशिक मंच पर पुनः अपनी प्रतिभा का परचम लहराए।

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पोस्ट मास्टर थे। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने गरीबी अपार्वी और उनकी खोजों ने कैसर, औषध-विकास तथा जैनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में क्रांति लाई थी। आज जब च



रंगोली



भारत देश में लोक गीत, संगीत, नृत्य, परंपराएं और कलाएं आदि केवल प्रदर्शन या मनोरंजन का साधन नहीं है, वास्तव में ये समाज को सुगठित रूप से संचालित करने का सूत्र है। विभिन्न बोलियों, भाषाओं, अंचलों, संस्कारों वाले विविधता भरे हमारे देश में लोक कलाएं, परंपराएं मानव सभ्यता के विकास की सहयोगी रही हैं। आधुनिक शिक्षा के प्रसार में पारंपरिक लोक परंपराएं, कलाएं लुप्त होती जा रही हैं, उन्हें अपने अस्तित्व और अपने पारंपरिक स्वरूप को बनाए रखने के संकट से जूझना पड़ रहा है। लोक कलाओं की विविध विधाओं से समाज को, विशेषकर नई पीढ़ी को परिचित कराना आवश्यक है।

कठपुतली लोककला का जीवंत रूप



हम जब छोटे बच्चे थे, हमारे आसपास कोई भी मेला, धार्मिक त्योहार या सामाजिक आयोजन कठपुतली नाटक के बिना अधूरा होता था। भारत में पारंपरिक कठपुतली नाटकों की कथावस्तु में पौराणिक साहित्य, लोक कथाएं और किंवदितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कठपुतली राजस्थान की प्राचीन लोक कला है। राजस्थान की यह लोक कला भारत और पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। कठपुतली लोक कला भट आदिवासी जाति के लोगों का पारंपरिक व्यवसाय भी है। कठपुतलियों को तार अथवा धागे के माध्यम से अंगुलियों द्वारा नचाया जाता है।


राजकुमार जैन राजन
लेखक

कठपुतली विश्व के प्राचीनतम रंगमंच पर खेले जाने वाले मनोरंजक कार्यक्रमों में से एक है। कठपुतलियों को विभिन्न प्रकार के पुरुष, पशु, देव, असुर पात्रों के रूप में बनाया जाता है। इनका नाम कठपुतली इस कारण पड़ा, क्योंकि इनको लकड़ी अर्थात् काप्ट से बनाया जाता था। कठपुतली के इतिहास के बारे में कहा जाता है कि इस पूर्व चौथी शताब्दी में महाकवि पाणिनी की 'आत्मध्याहृ' प्रथा में हमें 'पुतला नाटक' का उल्लेख मिलता है। इसके जन्म को लेकर कुछ पौराणिक मत इस प्रकार मिलते हैं कि भावान शिवजी ने काठ की मुर्ति में प्रवेश कर, माता पार्वती का मन बहलाकर इस कला को प्रारंभ किया था। इसी प्रकार उज्जैन नगरी के राजा विक्रमादित्य के सिंहासन में जड़ित 32 पुतलियों का उल्लेख 'सिंहासन बत्तीसी' नामक कथा में भी मिलता है।

भारत सहित पश्चिमाई देशों में कठपुतली नाट्य सदियों से लोकानुरंजन और शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। भारत से लेकर पूर्वी एशिया के देशों जैसे इंडोनेशिया, स्थानांशु, थाईलैंड, श्रीलंका,



जावा, सुमात्रा इत्यादि में विस्तार हुआ। आधुनिक युग में यह कला रूप, रोमानिया, चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी, जापान, अमेरिका, चीन आदि देशों में विस्तारित हो चुकी है। अब कठपुतली का उपयोग मात्र मनोरंजन न रहकर शिक्षा कार्यक्रमों, विज्ञानों आदि अनेक क्षेत्रों में किया जा रहा है।

हमारी विविधरंगी लोक संस्कृति, परंपरा, कलाओं की परंपरा में कठपुतली नृत्य का विशेष महत्व है। आज साड़बार दुनिया में वैश्वीकरण की आपाधी में हमारी अपने बाली पीढ़ी को हमारी इस स्वर्णिम विरासत से परिचित कराना बेद हाल आवश्यक हो गया है। हमारी

लोकजीवन, संस्कृति, कला, परंपरा आदि का प्रत्येक पक्ष इतना प्रबल व सशक्त है कि संवेदनहीन व्यक्ति भी संवेदन के तीव्र उद्गेत्र को उत्पन्न कर सकता है। भारतीय कला और कलाकृतियां व्यक्ति की आत्मा को झंझोड़ने की क्षमता रखती हैं।

उदयपुर शहर में विश्व विख्यात 'भारतीय लोक कला मण्डल' में इसकी स्थापना के साथ ही कठपुतली कला को विश्वव्यापी बनाने के स्तुत्य प्रयास किए हैं। कई कलाकारों को कठपुतली प्रदर्शन का प्रशिक्षण विश्व स्तर पर यहां प्राप्त हुआ है। भारतीय संस्कृति, चिंतनारंपरा, धर्म, अध्यात्म और दर्शन के मिश्रण ने कठपुतली कला को संप्रेषणक्षीय बनाया है। यह सच है कि भारतीय कला परंपराओं का संरक्षण उनके लगातार प्रदर्शन से ही संभव हो सकता है। देश में साक्षरता अभियान, बाल-विवाह, स्वच्छ भारत मिशन अभियान, मतदान के लिए जागरूकता अभियान जैसे आमजन को उनकी अपनी संस्कृति की भाषा में जागरूक करने के लिए कठपुतलियां माहात्मा गांधी के जीवंत कर देती हैं।

कला का क्षेत्र आज बहुत व्यापक हो गया है, इसमें निरंतर नई दृष्टि से कलाओं के नवीन स्वरूप का सूजन हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों से राज्य में परंपरागत रीत-सिवायों पर अधिरित कठपुतली के खेलों में काफी परिवर्तन हो गया है। अब यह खेल गांवों, मोहल्लों, सड़कों, गलियों में न होकर थियेटों, बड़े-बड़े मुकाबालों रींगमंचों व सिटारा होटों में होने लगा है। इसके बावजूद राजकीय संरक्षण व पोषण के अभाव में इस लोक-कला के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। अब गांव-मोहल्लों में कहीं कठपुतली का खेल नजर नहीं आता। कठपुतलियां केवल सजावटी वस्तु के रूप में ही खरीदी जा रही हैं। कठपुतली कला के संरक्षण-संवर्धन के लिए व्यापक प्रयत्नों की दरकार है। नए आयाम, नए प्रतिमान, नए मायने और नई तकनीयों की खोजकर कठपुतली कला और कलाकारों को राजान्याश्रय मिलना ही चाहिए।

प्रभु श्रीराम के बाल्यकाल की कहानियां सुनाता अयोध्या का दशरथ महल

धार्मिक दृष्टिकोण से विश्व में भारत राम के देश के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहां राम की जन्मस्थली अयोध्या है। यह दुनियाभर के हिंदू धर्मवर्लंबियों के आस्था का केंद्र है। यहां और भी स्थल हैं, जो भगवान राम से जुड़े हैं और वे उनके बचपन की कहानियां सुनाते हैं। इसी में एक दशरथ महल है, जहां के बारे में कहा जाता है कि बाल्यवास्था में राम यहीं पैजनिया पहनकर दुमकते हुए चलते थे। रामायण में भी इसका वर्णन है: "दुमक चलत रामचंद्र पहने पैजनिया।"


यशोदा श्रीवास्तव
लेखक

सभी धार्मिक ग्रन्थों में है

दशरथ महल का वर्णन

दशरथ महल के महात्म्य का वर्णन राम से जुड़े सभी ग्रन्थों में है। यहां बाल्यकीरणायां, महान कवि तुलसीदास कृष्ण रामचरित मानस हो या रामानंद सागर कृष्ण रामायण टीवी सीरियल ही पर्याप्त नहीं, रामलीला के बाल्यकाल के सुलभ हठ, किलकरियां, हसरे-मुसकुराने, रोने-मानने की लोलाओं का वर्णन भी पैजनिया के लिए इसका उल्लेख सबसे है। यह त्रेतायुग से लोकों व दशरथ महल के भव्य प्रवेश द्वारा अपने पुराने वैष्णव को लिखे हैं। दशरथ महल का भव्य प्रवेश द्वारा अपने पुराने वैष्णव को संरक्षित करते हुए यह आधुनिकता की चास्सी से भी लैश है। खंभों और दीवारों पर लंबे समयावधि तकटिकाऊ रहने वाले पेट-कोटिंग की परागण से थार दशरथ महल का वर्णन हो इसके लिए विशेष दर्शनार्थी सहायता केरद भी स्थापित है, जो यहां की समृद्ध विरासत, ऐतिहासिक महत्व, सांस्कृतिक योगदान व आध्यात्मिक महत्व के बारे में अवगत कराता है।



योगी सरकार ने यहां उपलब्ध

कराई तमाम सुविधाएं

योगी सरकार ने दशरथ महल के जीरोड़ा व सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया को अपनी जामा पफनाते हुए करीब तीन वर्षों में यहां उपलब्ध रुप से खोबसूरती को बालाकर दर्शन करने के लिए जारी किया था। यहां निर्मित 650 स्वाक्षर मीटर में बने सत्संग भवन में लाखग्राम 300 से 350 सत्संगी एक साथ कीर्तन-भजन कर सकेंगे। दशरथ भवन की तरफ श्रद्धालुओं को भौतिक रूप से आकर्षित करने के लिए जगमगाती लाइटिंग सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है। यहां श्रीराम के जीवन को चित्रित करते हुए वाल पेटिंग, गमचरित मानस के दोहे लिखे हैं। दशरथ महल का भव्य प्रवेश द्वारा अपने पुराने वैष्णव को संरक्षित करते हुए यह आधुनिकता की चास्सी से भी लैश है। यहां आयोध्या का दशरथ महल के लिए जगमगाती लाइटिंग सभी को ही अपनी सत्ता और शान मान भैठता है। नतीजा-राजाजा से सब कुछ मंडों वाला

हल्द्वानी के सुशीला तिवारी में प्रशिक्षित कलाकारों में अधिकांश पहली बार मंच पर उतरे थे, किंतु एनएसडी के रंगकर्मी चंदन विष्ट, चित्रा विष्ट और शैलनट के संस्थापक श्रीश डोभाल के मार्गदर्शन ने उन्हें ऐसा आमत्ववास और परिष्काराद्वय के लिए उनकी नवीनता भूल बैठे। अधिनय की सह जाता और संवादों की पैनी पकड़ इस वात का प्रमाण थी कि एक माह का यह अभ्यास किसी गहन साधन से कम नहीं रहा। पहल नाटक जी लो जिंदगी, रुस के प्रसिद्ध नाटककार निकोलाई एडमैन की दूसरी इड से प्रेरित था। यह नाटक एक बेरोजगार युवक गुमान सिंह (अर्थवर्ती नेहीं) की कथा है, जो सास (यांगिटा भंडारी) और समाज के तानों से जूझते हुए जीवन से हार मान लेता है। विभिन्न संगठनों और संस्थाओं के स्वार्थपूर्ण शोषण से निराश गुमान आत्महत्या जैसा कदम उठाने को बाध्य होता है, किंतु जीवसंरक्षिती गीत (संस्कृत लोहानी) का दस्योग और आत्मचित्त उठने एवं उद्देश्य की ओर ले जाता है। गुमान सिंह के रूप में अर्थवर्ती नेहीं ने अपनी गहन संवेदन से दर्शकों को बांधे रखा, वहीं संस्कृति लोहानी और योगिता भंडारी ने अपने पात्रों को प्राणवान बना दिया। गौरव जीवनी ने ठेकेदार के रूप में नाटक में तीखापन और धार जोड़ी। यह नाटक न केवल बेरोजगारी की पीड़ा, बल्कि व्यवस्था की खाली परावर्ती की चुम्पन को उधाइता



हम खेल मत्री मनसुख मादविया के समर्थन के लिए बहुद आभारी हैं। उनका प्रोत्साहन हमारे लिए अत्यन्त भयंकर का और अधिक सुलभ और लोकप्रिय बनाने के हमारे प्रेरणा है।
—युवराज सिंह

हाईलाइट

दूसरे टेस्ट में मिल सकती है बल्लेबाजी के लिए अनुकूल पिच

नई दिल्ली : दिल्ली में 10 अक्टूबर से शुरू होने वाले दूसरे और अंतिम भारत-इंग्लैंड टेस्ट मैच की पिच पर कुछ रिसों में घास होगी और कुछ हिस्सों में सपाट सतह होगी, जबकि दूसरे टेस्ट मैच की अहमतावाल की पिच पर घास की समतल पतर ही है। दिल्ली की पिच काली मिट्टी की होगी और बल्लेबाजों के अनुकूल होगी, तथा सतह धीरे-धीरे सुखने के कारण इसन की भूमिका भी महत्वान्त होगी। 2019 में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप शुरू होने के बाद से भारत की सबसे हरी पिंवों में से एक पर पहले टेस्ट में पहले बल्लेबाजों करने के बाद वेस्टइंडीज तीन दिन के अंदर ही हार गया। लाल मिट्टी वाली पिच पर चार मिलोंमीटर तक घास बिछी होने और अच्छी ऊँचाई के साथ, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज ने पहले दिन बानादर प्रदर्शन किया और वेस्टइंडीज 44-1 ओवर में ऑल आउट हो गया।

गंभीर की टीम में हार की कोई जगह नहीं: वरुण मुंडे : इसन गेंदबाज वरुण घाकवर्णी ने कहा है कि भारत के मुख्य कोह गतम गंभीर ने टीम में ऐसी मानसिकता भरी है जिसमें हार और औसत दर्जे के प्रदर्शन के लिए कोई जगह नहीं बचती। कोलकाता नाइट राइडर्स टीम में भी गंभीर के साथ काम कर चुके घकवर्णी ने मंगलवार से दूर फ्रेंचार्स से कहा है मैं उनके साथ आईपीएल में काम कर चुका हूँ और हम 2024 में जीतें थे। मैं लिये कुछ नया नहीं है क्योंकि मैं उनके साथ काम कर चुका हूँ। मैं उनके बारे में यह कह सकता हूँ कि वह टीम को इस तरीके से तोरा करते हैं जिसमें हारने का विकल्प नहीं होता।

ओसाका ने लेला फर्नांडिज को हराया

वुहान (चीन) : नाओमी ओसाका ने फहला सेट जीतने के बाद जोरदार वापसी करते हुए मंगलवार का यहां लेला फर्नांडिज को हाकर डिल्टूर्पैट 1000 लेवल वुहान ओपन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दोर में जाह बनाई। वर्ष 2017 के बाद यहां पहली बार खेल रही ओसाका ने सेटर कोर्ट पर दिन के पहले विमें फर्नांडिज के खिलाफ 4-6, 7-5, 6-3 से जीत दर्ज की। ऐसा रात्कुन जब अनली जीरी रख्ये। पिछले महीने टी20 अंतर्राष्ट्रीय प्रारूप से सन्यास लेने वाले स्टार्क वेस्टइंडीज के टेस्ट दौरे से लौटने के बाद अगस्त में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ एकदिवसीय शृंखला से निपाल के बाद अगस्त में रेजट पदक के मानकर से बाहर रही। वीसी साल के अंतर्वाले ने कुल 323 किंगा (146 किंगा स्कैच 100 और 177 किंगा वलीन एवं जर्क) दर्जन उठाया और सोमवार को 39 प्रतियांगियों के बीच 160+ च्यान हासिल किया। उन्होंने अगस्त में अहमदाबाद में राष्ट्रमंडल भारोत्तोलन वैष्णविनाशिप में उठाए कुल 35 किंगा (152 किंगा और 183 किंगा) वजन से 12 किंगा वजन कम उठाया। उन्होंने अहमदाबाद में जीत की बीतीलाला खेलने के लिए व्यालीफाई किया।

अजय वल्लूरी 16वें स्थान पर रहे

फोर्ड (नॉर्थ) : राष्ट्रमंडल वैष्णविनाशिप में पूर्ण 79 किंगा वर्ष में 16वें विश्व नपर रहे। जिससे मीराबाई चानू के 48 किंगा वर्ष में रेजट पदक के मानकर से बाहर रही। ये उन्हें व्याकरण आने के कारण सुकाबले के बीच से हटना पड़ा। सोफिया केनिंग ने जिसमें हारने का बीतीलाला खेलने के लिए विमें फर्नांडिज के खिलाफ 4-6, 7-5, 6-3 से जीत दर्ज की। ऐसा रात्कुन जब अनली जीरी रख्ये। पिछले महीने टी20 अंतर्राष्ट्रीय प्रारूप से सन्यास लेने वाले स्टार्क वेस्टइंडीज के टेस्ट दौरे से लौटने के बाद अगस्त में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ एकदिवसीय शृंखला से निपाल के बाद अगस्त में रेजट पदक के मानकर से बाहर रही। वीसी साल के अंतर्वाले ने कुल 232 किंगा (146 किंगा स्कैच 100 और 177 किंगा वलीन एवं जर्क) दर्जन उठाया और सोमवार को 39 प्रतियांगियों के बीच 160+ च्यान हासिल किया। उन्होंने अगस्त में अहमदाबाद में राष्ट्रमंडल भारोत्तोलन वैष्णविनाशिप में उठाए कुल 35 किंगा (152 किंगा और 183 किंगा) वजन से 12 किंगा वजन कम उठाया। उन्होंने अहमदाबाद में जीत की बीतीलाला खेलने के लिए व्यालीफाई किया।

बैडमिंटन में भारत ने श्रीलंका को हराया

युगाहाटी : भारत ने शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए मंगलवार को यहां सुनुष्ठानदिनात कप के लिए वीडील्यूपैट विश्व जनरियर बैडमिंटन वैष्णविनाशिप की मानकर वैष्णविनाशिप में शीर्ष पर रहने के प्रबल दोवेदार और दूसरे रीयर भारत उम्मीदों पर खरा उत्तरवे हुए श्रीलंका को लॉकिंटन में जगह निपी है। श्रीलंका को वैष्णविनाशिप में दूसरे दो दोवेदार को लॉकिंटन में जगह निपी है। उनकी वैष्णविनाशिप में शीर्ष पर रहने के प्रबल दोवेदार और दूसरे रीयर भारत की जबकि फिल्डिंग्स ने 42-45, 45-27, 45-21 से हराया। श्रीलंका ने सोमवार को करीबी मुकाबले में संयुक्त अंबर रातों को शिक्षण से बाहर रही है। पूर्ण वर्ग में किम वू-जिन ने अपने करियर का पांचवां औलंपिक स्वर्ण पदक जीता जो किसी भी तीरंदाज द्वारा सबसे ज्यादा है। एलिसन ने कहा है। उनके 50वें रैक के खिलाड़ी की आमदनी शायद मुझसे ज्यादा है। एलिसन ने कहा है। पांच बार के ओलंपिक एथलीट द्वारा जीते रहने के लिए विकेट से बाहर रहने के लिए विकेट के बाद अपने साथ लेकर चले गए थे, क्योंकि भारतीयों की तैयारी करने वाले नहीं, बल्कि प्रेमियर लीग (एपीएल) से इतर

इंग्लैंड ने बांग्लादेश को चार विकेट से हराया

महिला विश्व कप : हीथर नाईट ने 79 दिनों की खेली शानदार पारी, एकसेलेटन ने चटकाए तीन विकेट



इंग्लैंड की हीथर नाईट ने जुड़ासु पारी खेलते हुए टीम को जितवाया। एंजेसी

गुवाहाटी, एंजेसी

शीर्ष क्रम की अनुभवी बल्लेबाज हीथर नाईट ने नानुक समय में शानदार अर्धशतक (नावाद 79) बनाकर इंग्लैंड को बांग्लादेश के खिलाफ महिला विश्व कप के मुकाबले में मंगलवार को चार विकेट से संघर्षपूर्ण जीत दिला दी।

बांग्लादेश ने शोभना मोस्तारी (60) के अर्धशतक से 49.4 ओवर में 178 रन बनाए। इंग्लैंड ने खराब शुरुआत से उत्तर हुए नाईट के अर्धशतक से 46.1 ओवर में छह विकेट पर 182 रन बनाकर अपनी लगातार दूसरी हार बनाई।

बांग्लादेश को दो मैचों में पहली हार का सामना करना पड़ा। लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही। ऐसी जोन्स के पांचवां एक रन बनाकर पहले ही ओवर में पगबाधा हो गयी। टैमी बोमांट 13 रन बनाकर 29 के स्कोर पर पवेलियन लौट गयी। कप्तान नानाली शिवर ब्रैंट ने 32 रन बनाये लेकिन उनका विकेट 69 के स्कोर पर पर पहुँचा दिया। उन्होंने शार्लेट डीन के साथ 79 रन की मैच विजयी अवैजित साझेदारी की। शार्लेट डीन ने 56 गेंदों पर नावाद 27 रन बनाए। हीथर नाईट को धैर्य नियांगक खालून ने तीन खिलाड़ियों को आउट कर इंग्लैंड को झक्की लगाया। फाहिमा खालून ने जीत दिलाई। इंग्लैंड को पांच विकेट 78 रन पर गिर गया। एलिस कैप्सी 20 रन बनाकर छठे बल्लेबाज के रूप में 103 रन के स्कोर पर आउट हुई। ऐसे समय में हीथर को शार्लेट डीन का साथ मिला और दोनों ने पारी को संवारने का काम शुरू किया। हीथर बल्लेबाजों को आउट करने के बाद एक छोटा सा पतन हुआ - 34 रन पर 4 विकेट - लेकिन नाईट डटी ही और डीन के साथ मिलकर सातवें विकेट के लिए 79 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी करके इंग्लैंड को जीत दिलाई। इससे पहले इंग्लैंड ने टॉप क्रिकेटर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

शेखाना मोस्तारी को छोड़कर अन्य कोई बल्लेबाज इंग्लैंड के गेंदबाजों के सामने टिक नहीं पाया। निचले क्रम में रेवेंट खान ने संघर्षकरते हुए 27 गेंदों में छह चौकों और एक छक्के की मदद से नावाद 43 रन बनाए। जिसकी बदौलत बंगलादेश 178 तक पहुँच सका।



बांग्लादेश

178/10 (49.4 ओवर)

- सुलिया हैदर का डंकी बोल 04
- शरमीन का जोंस बो एकसेलेटन 30
- निगर सुलाना का डीन बो स्मिथ 00
- मोस्तारी पगबाधा बो कैपसी 60
- शोरना अखर का जोंस बो डीन 10
- रितु मोनी का स्मिथ बो डीन 05
- फाहिमा खालून बो एकसेलेटन 07
- नाहिदा का डीन बो एकसेलेटन 01
- राबिया खान नावाद 43
- मारुफा का बैल बो कैपसी 00
- शजोदा का स्किरेवर ब्रैंट बो स्मिथ 01

गेंदबाजी : बैल 7-1-28-1, स्मिथ 9.4-1-33-2, नेट स्किरेवर ब्रैंट 5-0-32-0, एकसेलेटन 10-3-24-3, डीन 10-2-28-2, कैपसी 8-1-31-2

मंधाना एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बरकरार



दुर्बाई : मौजूदा महिला एकदिवसीय विश्व कप के दो मैच में कमज़ोर प्रदब्दिन के बावजूद भारत की स्टार क्रिकेटर स्मृति मंधाना आईसीसी महिला एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बरकरार है, लेकिन उनकी बहुत कम हो गई है। स्मृति के 79.1 रेटिंग अकें है और वह इंग्लैंड की नेट स्किरेवर ब्रैंट से 60 अंक आगे है। विश्व कप से टीक पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ती